ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 47 | 10 से 16 मार्च, 2016 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 फा. शु. 02

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर स्पीकर हॉल रफी मार्ग, नई दिल्ली में भव्य समारोह का आयोजन

आर्य नेताओं ने दी महर्षि दयानन्द जी को श्रद्धांजलि

महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा को क्रियान्वित करके ही विभिन्न राष्ट्रीय सामाजिक समस्याओं का किया जा सकता है समाधान

– स्वामी आर्यवेश

राष्ट्र नायक महर्षि दयानन्द जी से प्रेरणा लें युवा

– ठा. विक्रम सिंह

शुक्रवार, 4 मार्च 2016, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी,महान समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक "महर्षि दयानन्द सरस्वती का 192 वां जन्मोत्सव" स्पीकर हाल, रफी मार्ग, नई दिल्ली में सोल्लास मनाया गया। समारोह में दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों से सैंकड़ों आर्य जनों ने सम्मिलित होकर महर्षि दयानन्द को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये व उनके आदर्शो पर चलने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही, उनसे प्रेरणा पाकर हजारों नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। लेकिन आज राष्ट्र के सामने आतंकवाद, प्रान्तवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण हत्या की चुनौतियां सामने हैं जिसके विरूद्व संघर्ष का शंखनाद आर्य जनों को करना है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज के सर्वतोमुखी विकास एवं उन्नति के लिए समाज एवं राष्ट्र के विभिन्न पहलुओं पर अपना प्रभावशाली दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। यदि देश की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान करना है तो महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों को क्रियान्वित करना होगा। स्वामी दयानन्द जी ने देश की सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता के सम्बन्ध में अपना मन्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा है कि वर्तमान में प्रचलित कथित जातिप्रथा मनुष्यकृत है, ईश्वरकृत नहीं। परमात्मा ने सब मनुष्यों को मनुष्य के रूप में उत्पन्न किया है और बच्चा पैदा होने के बाद अपने माता–पिता और परिवार द्वारा प्राप्त जाति के साथ जोड़ा जाता है। स्वामी दयानन्द जी ने जन्मना जाति के आधार पर ऊँच–नीच, छूआछूत एवं छोटे बड़े का भेद पूरी तरह अवैदिक घोषित किया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति की पहचान गुण, कर्म, स्वभाव से होनी चाहिए। अच्छे गुणों से सम्पन्न और अच्छे कर्म करने वाला व्यक्ति चाहे कहीं भी पैदा हुआ हो उसी का सम्मान और प्रतिष्ठा होनी चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि जब तक वर्तमान में चल रही जन्मना जाति प्रथा को समाप्त नहीं किया जायेगा तब तक जातीय विद्वेष एवं ऊँच–नीच की भावना समाज से समाप्त नहीं हो सकती। इसी प्रकार विभिन्न मत–सम्प्रदायों में बंटे हुए समाज को एकरूपता में लाने के लिए महर्षि ने एकेश्वरवाद के सिद्धान्त को एकमात्र उपाय बताया। उन्होंने कहा कि यदि संसार के सभी मत–सम्प्रदायों और राष्ट्रों के लोग एक ईश्वर की अवधारणा को स्वीकार कर लें, उस ईश्वर को सर्वव्यापक एवं सर्वान्तर्यामी मान लें तो मानव मात्र को मत–सम्प्रदायों एवं वर्गों में बांटने वाली संकीर्ण मानसिकता को बदला जा सकता है। क्योंकि जब दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति सभी प्राणियों में उस परमात्मा की सत्ता को स्वीकार करेगा तो वह किसी के प्रति नफरत एवं घृणा पैदा नहीं कर सकता। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आज हमारे देश में राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था जाति–पांति और मजहब सम्प्रदाय के नाम पर की जाती है, जो बेहद चिन्ता की बात है। उन्होंने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन करके महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा प्रणाली लागू की जाये जिससे देश के समस्त बच्चे अनिवार्य रूप से समान एवं निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर सकें। स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में कहा है कि यह राजनियम होना चाहिए कि प्रत्येक बालक शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय में जाये, चाहे कोई राजकुमार हो अथवा राजकुमारी, चाहे गरीब की सन्तान हो सबको तुल्य वस्त्र, खान–पान और आसन मिलना चाहिए। यदि यह व्यवस्था लागू कर दी जाये और शिक्षा में शत–प्रतिशत समानता लागू कर दी जाये तो समय–समय पर अधिकारों के लिए होने वाले आन्दोलनों एवं जातीय दंगों से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। स्वामी जी ने बड़े दुःख के साथ कहा कि आजादी के बाद स्वामी दयानन्द जी की विचारधारा को योजनाबद्ध तरीके से उपेक्षित किया गया तथा उनके सिद्धान्तों को केवल किताबों तक सीमित कर दिया गया। स्वामी जी ने कहा कि आज यदि श्यामजीकृष्ण वर्मा जैसे महर्षि दयानन्द जी के शिष्य की अस्थियाँ लन्दन से लाई जाती हैं तो देश के शीर्षस्थ नेता यह बताने से परहेज करते हैं कि श्यामजीकृष्ण वर्मा के गुरु और उन्हें विलायत में शिक्षा के लिए भेजने वाले दयानन्द सरस्वती जी ही थे। महर्षि दयानन्द जी के साथ किसी भी राजनैतिक पार्टी ने न्याय नहीं किया। अतः आर्यों को इस सम्बन्ध में गम्भीरता से विचार करके निर्णय लेना चाहिए कि वह हर मौके पर महर्षि दयानन्द जी के साथ

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वर्ग लोक में प्रवेश कैसे मिले?

– स्वामी आत्मानन्द सरस्वती

.....गतांक से आगे

महात्मा जी– विद्याधर ! कान का व्याख्यान समाप्त हो गया। जाओ अब तीसरे द्वार से वाणी को बुला लाओ!

विद्याधर– महाराज ! "वाणी देवी" आपकी सेवा में उपस्थित है।

महात्मा जी– देवी जी ! आपकी महिमा अपार है। भीम और द्रोपदी के द्वारा कुरुक्षेत्र के स्थल पर उतर कर महाभारत का खेल आप ही ने खिलवाया। कैकेई की जिह्वा में बैठकर रामचन्द्र जैसे महात्मा वीर बालक को वनवास आप ही ने दिलवाया। विभीषण के लिये कठोरता को धारण कर रावण के मुँह से निकल कर रावण का सत्यानाश आप ही ने करवाया। संसार में कौन–सा संग्राम है जिसमें कुछ न कुछ भाग आपका न हो। आप चाहें तो दुनियाँ में एक क्षण में शान्ति का राज्य स्थापित कर दें। आपकी इस तरह की लाखों कार्यवाईयाँ संसार के इतिहास में जगह–जगह लिखी हुई हैं। आज हम आपकी इस विशेषता के विषय में नहीं सुनना चाहते किन्तु यह जानना चाहते हैं कि दुनियाँ के प्राणियों को दुनियाँ के झंझटों से छुड़ाकर स्वर्ग का द्वार आप किस तरह खोल सकती हैं।

वाणी– महाराज ! आप अन्तर्यामी हैं। सबके दिल की बात जानते हैं। आप जैसे योगिराजों के सम्मुख कोई अपना गुप्त से गुप्त भेद भी कैसे छुपा सकता है। आपने मेरी बुराइयों का जो चित्र खींचा है वह अक्षरशः सत्य है किन्तु इतना अवश्य कहे देती हूँ कि इसमें मेरा अपराध कुछ भी नहीं है। हमारी प्रत्येक कार्यवाही दूसरों के आधीन होती है। जैसे कोई पुरुष हाथ में तलवार लेकर उससे अपने ही गले को साफ कर ले तो कोई भी बुद्धिमान मनुष्य तलवार को अपराध का उत्तरदायी मानने को तैयार न होगा। तलवार एक साधन है और वह मनुष्य के अधिकार में है। इससे भला या बुरा जैसा काम लेना चाहे ले सकता है। ठीक इसी प्रकार संसार के लड़ाई–झगड़ों में मेरा पर्याप्त भाग होते हुए भी मैं इतनी उत्तरदायी नहीं हूँ जितना मुझ से काम लेने वाला मनुष्य। आप पूज्य और वृद्ध हैं, आपके सामने बोलना अपमान जनक माना जायेगा। परन्तु मैं एक निवेदन किए बिना नहीं रह सकती कि मुझ अधिकंचन का भी इस पुरुष ने अपयश फैलाया है। परमात्मा ने मुझे जिस लिए बनाया है, यदि मनुष्य मुझ से वैसा ही कार्य ले तो न तो संसार में इतने युद्धों का प्रवर्तन हो और न ही मनुष्य के लिये स्वर्ग का द्वार बन्द हो। आपको विदित है कि मैं अग्नि देव की पुत्री हूँ और शास्त्रों में अग्नि का शाब्दिक अर्थ आगे ले जाने वाला है। जो लोग इस विशेषता को ध्यान में रखकर मुझे जगत् के सभ्य पुरुषों के आगे खड़ी होने योग्य बनाते हैं उनका इस लोक में भी सम्मान होता है और स्वर्ग लोक में भी। रामचन्द्र का नाम तीन युगों के पश्चात् आज भी आदर के साथ क्यों लिया जाता है? इसका एक ही कारण है कि उसकी वाणी एक थी उसने दृढ़ता पूर्वक कहा था– **'रामोर्द्विर्न भाषते'** "राम की वाणी दो नहीं हो सकती। मैंने जो कुछ कह दिया पत्थर की लकीर है।" पितामह भीष्म ने अपने पिता के सामने एक ही बार कहा था कि मैं जीवन भर विवाह नहीं करूंगा और अपने पिता के पश्चात् भी आजीवन अपने मुँह से निकली हुई इस वाणी पर अटल रहा। एक नहीं सहस्त्रों उदाहरण भारतवर्ष के इतिहास में आप ऐसे पायेंगे जो कि मेरे और मेरे स्वामी के नाम को प्रकाशित करने वाले होंगे। अग्नि शब्द का दूसरा अर्थ है, ज्ञानवान् होना। जो मनुष्य मुझे पवित्र ज्ञान के अनुसार प्रयोग में लाता है, दुनियाँ सहस्त्रों मुखों से उसकी प्रशंसा करती है। ऋषियों की वाणी से निकले हुए उपनिषदों और धर्म शास्त्रों के सामने संसार के सभी भद्र पुरुष नतमस्तक हैं। इस का कारण केवल यही है कि यह धर्मग्रन्थ ऋषियों की वाणी से वेद के पवित्र ज्ञान को ध्यान में रखते हुए निकले हैं। इन महर्षियों के लिए स्वर्ग का द्वार आज तक किसी ने बन्द नहीं किया और न इस प्रकार आचरण करने वाले मनुष्य के लिए बन्द कर सकता है।

महात्मा जी– पुत्र विद्याधर ! वाणी का व्याख्यान समाप्त हो गया। इन्होंने अपनी अच्छी सफाई दी है। जाओ चौथे द्वार के द्वारपाल "मन" को बुला लाओ।

विद्याधर– महाराज जाने से तो मुझे निषेध नहीं किन्तु इस देवता का नाम सुनते ही मुझे भय लगता है। सारे जगत को एक अंगुली पर रखकर नचाने वाले इस पिशाच के सम्मुख जाने से इसलिये घबराता हूँ, कि कहीं मुझे भी अपने चंगुल में न फंसा ले।

ब्रह्मानन्द– महाराज ! जो कुछ विद्याधर कह रहे हैं, यदि यह ठीक है तो मुझे ऐसे देवता के मत्थे न लगाइये कहीं वह बात न हो कि गए थे चौब्बे जी बनने, दुब्बे भी न रहे। मैं आगे ही संसार के थपेड़ों से तंग हूँ, किसी और नये झंझट में न फंसा दीजिएगा।

महात्मा जी– बेटा ब्रह्मानन्द ! घबराओ मत। संसार की सभी शक्तियाँ भागने वाले के पीछे दौड़ा करती हैं और जो खड़ग ले कर डट कर खड़ा हो जाता है उसके आगे सर झुका दिया करती हैं। देखों जिस मन देव से तुम इतना घबरा रहे हो वही महात्माओं की मुठ्ठी में रहा करता है। वे चाहें तो मसल कर उसका प्राण निकाल दें। बेटा विद्याधर ! जाओ ! घबराओ मत उसे शीघ्र बुला लाओ।

विद्याधर– (महात्मा जी के वचन को सुन कर विद्याधर को शान्ति हुई और मनदेव (मन) को लाकर उपस्थित कर दिया) महाराज ! मन उपस्थित है।

महात्मा जी– भाई मन देव ! संसार के सारे खेल तुम्हारी अधीनता मे चल रहे हैं। तुम्हारा इतना भारी प्रभाव है कि जड़ शक्तियों पर ही नहीं, जीवात्मा जैसी चेतन शक्तियों पर भी तुम्हारा वशीकार है। तुम जैसा चाहो इन्हें नाच नचाते हो। तुम ही से तंग आ कर जीवात्मा ने यह प्रार्थना की है :–

ओ३म्-यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु।।

अर्थ– भगवन् ! यद्यपि मेरा मन प्रकाश पुँज है किन्तु जागते हुए और सोते हुए भी यह दूर २ की दौड़ लगाता रहता है। आप की कृपा से इस के अन्दर पवित्र विचार हों जिससे कि यह आप भी शान्त हो और मुझे भी आप के पवित्र स्वरूप के दर्शन होने दे।

अर्जुन जैसे वीर पुरुष ने भी तुम ही से तंग आकर कृष्ण भगवान् से कहा था कि "भगवन् मन बडा चंचल है आप इस को रोकने के लिए उपदेश देते हैं। किन्तु मैं तो समझता हूँ कि वायु का रोका जाना सरल है और इसका रोकना कठिन है।

दस मिनट के लिए भी संध्या उपासना में बैठने वाले प्राणी को तुम चैन नहीं लेने देते। तुम्हारी इस प्रकार की विशेषताओं का वर्णन करने के लिए मैंने तुम्हें नहीं बुलाया, किन्तु मेरी प्रार्थना यह है कि तुम शान्त होकर दुनिया के प्राणियों को शान्ति के पवित्र अमृत का पान करने से न रोक कर चौथा द्वार किस मूल्य पर खोल सकते हों? उसी का वर्णन करो।

मन– महात्मा जी ! आपने जो कुछ वर्णन किया है वह सब ठीक है। आप सब कुछ जानते हैं किन्तु मेरा निवेदन यह है कि जगत् में भले या बुरे कर्मों का उत्तरदाता एकाकी मैं ही हूँ यह बात माननीय नहीं। मेरे स्वभाव के विषय में जो कुछ आप ने वर्णन किया वह भी अक्षरशः ठीक है। किन्तु इन स्वभावों को प्रकट करने वाला मैं स्वयं नहीं हूँ, यह सब दोष जीवात्मा का है इसने मुझे जिस मार्ग पर चलाया उसी पर चल दिया। आगे भी ऐसा होना आवश्यक है। महर्षियों ने मेरे लिए मेघ का उदारण दिया है। जो मनुष्य मेघ की विशेषताओं को देख कर मुझे इस साँचे में ढालना आरम्भ कर देते हैं। उनके लिए स्वर्ग का द्वार बन्द करने वाली कोई शक्ति नहीं है। मेघ जब तक आकाश मण्डल में दौड़ते रहते हैं और वायु उन्हे एक स्थान पर ठहरने नहीं देता तब तक वे पानी बरसा कर संसार में मनुष्यों को प्रसन्न करना आरम्भ कर देते हैं। ठीक। इसी प्रकार भगवान् पतंजलि के वचनानुसार जो लोग अपने मन को लौकिक सम्बन्धों की वायु से बचाकर इसकी गतियों को रोकना आरम्भ कर देता है उनके लिए स्वर्ग का द्वार खुल जाता है।

महात्मा जी– पुत्र विद्याधर ! मनदेव का कथन पूरा हो चुका है। ब्रह्मानन्द ने उनके उपदेशों को भी सुन लिया। अब जाओ पाँचवें द्वार से प्राण को भी बुला लाओ।

विद्याधर– महाराज ! प्राणदेव को बुला लाया हूँ आपके सम्मुख उपस्थित है।

महात्मा जी– प्राणदेव ! यद्यपि तुम्हारा अपना कोई अपराध नहीं है। तुम्हारी सभी गति–विधियां मन के इंगित पर ही होती हैं। जब मन ठहरता है तो तुझे भी ठहरना पड़ता है। जब वह दौड़ता है तो तुम्हें भी विवश हो दौड़ना पड़ता है किन्तु फिर भी तुम स्वर्ग के एक द्वार के द्वारपाल हो और अपने द्वार से किस दशा में मनुष्य को प्रवेश दे सकते हो यह तुमसे भी पूछना आवश्यक प्रतीत होता है। आशा है तुम इस प्रश्न का भली भांति उत्तर दोगे।

प्राणः– भगवन् ! आपने जो प्रश्न किया है वह अति गहन है किन्तु मैं अपनी बुद्धि के अनुसार उत्तर देने का प्रयत्न करूँगा। महर्षियों ने मेरी उत्पत्ति आकाश से बतलाई है। और यह एक मानी हुई बात है कि वस्तु की जिससे उत्पत्ति हो उस वस्तु के अन्दर उस के गुणों को स्थिर रखने से ही वह अपने स्वरूप में बनी रह सकती है और उस दिशा में वह वस्तु मनुष्य के लिए अधिक लाभदायक होती है। आकाश में एक विशेष गुण है कि वह जिस स्थान पर खड़ा हुआ है वहां से हिलने–जुलने का यत्न नहीं करता। मेरे अन्दर भी यदि इस तरह की विशेषता उत्पन्न कर दी जावे तो मैं अपने ही मन के दोषों को भी दूर करने में सफल हो सकता हूँ महर्षि पतंजलि ने मन के रोकने के बहुत से उपाय बतलाते हुए एक यह भी बतलाया है–

"प्राणायामद्वा"

प्राणों को रोकने से भी मन रुक जाता है। इस प्रकार जो मनुष्य नित्य प्राणायाम करते हैं, वे अपने प्राणों के द्वारा शरीर में भिन्न २ प्रकार की शक्तियाँ उत्पन्न कर सकते हैं जिससे कि इस लोक में संसार के कार्य कलाप चलाने में भी सफल होते हैं और इस अभ्यास के लम्बा और दृढ़ होने पर मन का विरोध करते हुए स्वर्ग के द्वार को भी अपने लिए खुला पाते हैं।

महात्मा जी– भाई ब्रह्मानन्द ! तुमने भाव नगर में जो मेरा व्याख्यान सुना था अब तुम्हें ज्ञान हो गया कि मेरे उस व्याख्यान में कोई भ्रान्ति न थी। यदि तुम प्रकाश के पुंज और उस स्वर्ग लोक में जाने की इच्छा रखते हो, तुम्हें इन पांचों द्वारपालों के उपदेश पर अवश्य आचरण करना होगा।

ब्रह्मानन्द– महाराज ! मैंने आपके भी और इन द्वारपालों के भी उपदेश को ध्यान से सुना है आपकी आज्ञा का पालन मैं हार्दिक प्राण–पण से करूंगा तथा सर्वदा आपका आभारी रहूंगा।

यह कहकर ब्रह्मानन्द ने वन का मार्ग पकड़ा और महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी समाधि में मग्न हो गए। ●

जीवन में यज्ञों का महत्त्व

– आचार्य विश्वेन्द्र आर्य

आदर्श गृहस्थों के द्वारा ही आदर्श परिवारों का निर्माण किया जाता है। जिन परिवारों के अन्दर यज्ञीय भावना होती है वे ही आदर्श परिवार कहलाने के अधिकारी होते हैं। यज्ञीय भावना का आशय है – यज्ञ की भावना और यज्ञ की भावना का मुख्य आशय है स्वार्थ का त्याग और परोपकार (परमार्थ) का ग्रहण। जहाँ पर ये भावना है वे परिवार निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ करते हैं। इस यज्ञीय भावना का विकास करने के लिए ही परमेश्वर ने सृष्टि के आदिकाल में मानव की उत्पत्ति के साथ ही यज्ञ की भी उत्पत्ति की। परमेश्वर की आज्ञा है – 'प्रांचं यज्ञं प्रणतया सखायः' (ऋग्वेद 10/101/2) इस पावन प्रेरक यज्ञ को सभी जन मिलकर किया करें। बिना यज्ञ के उत्तम परिवारों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसलिए हमारे परिवार भी ऐसे हों जहाँ पर (यज्ञं दुहानम्) नित्य यज्ञ होते रहें। यज्ञों के द्वारा ही हमारे परिवार अत्यन्त मनोहर, धन–धान्य से परिपूर्ण, हितकारी और रमणीय बनते हैं।

वैदिक संस्कृति के अनुसार यज्ञ हमारे परिवारों को सुख–समृद्धि, आयु, आरोग्यतादि प्रदान करने वाले हैं। ऋग्वेद के अनुसार –

उप क्षरन्ति सिन्धवो मयोभुव ईजानं च यक्ष्यमानं च धेनवः।
पृणन्तं च पपुरिं च श्रवस्यवो घृतस्य धारा उपयन्ति विश्वतः।।
– ऋ. 1/125/4

अर्थात् यज्ञ करने वाले और यज्ञ की इच्छा करने वाले को गायें व सुख–शांति इस प्रकार होते हैं, जिस प्रकार नदियाँ स्वयमेव समुद्र में जा गिरती हैं। इतना ही नहीं अपितु उसे पालन करने की शक्ति, अन्न और यश, पुष्टि और तुष्टि जल की धाराओं के समान चारों ओर से प्राप्त होते हैं।

अथर्ववेद के अनुसार – यज्ञ इन्द्रमवर्धयत्। (20/27/5) यज्ञ से ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। यज्ञानुष्ठान से ही सद्गुण, सुविचार, उत्तम आचार और सत्यज्ञान की प्राप्ति होती है।

यज्ञं तपः (तै. आ. 10/8/1) यज्ञ एक प्रकार का तप है। अतः प्रत्येक परिवार में यज्ञों का अनुष्ठान अवश्य ही होना चाहिए।

यज्ञ शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थों वाला है। संक्षेप में यदि

कहना हो तो कह सकते हैं कि लोकोपकार के लिए किये जाने वाले सभी शुभ कार्य यज्ञ हैं। सकाम, निष्काम, नित्य, नैमित्तिक सभी कर्म यदि मन और हृदय को पवित्र करते हैं तो वे सार्थक हैं और यज्ञ हैं।

यज्ञ शब्द 'यज्' धतु से बना है जिसका अर्थ वैयाकरणों और नैरुक्त आचार्यों के अनुसार देव पूजा, संगतिकरण और दान है।

देवपूजा – जिन कार्यों में देवों की पूजा अर्थात् जो विद्या, ज्ञान और धर्म के सेवन से वृद्ध, दिव्य गुणों से युक्त, महान तेजस्वी, अपने ज्ञान–विज्ञान के द्वारा संसार का उपकार करने वाले महान विद्वान्, इस लोक और परलोक के सुख के लिए सर्वत्र विद्या, ज्ञान और धर्म का सदा उपदेश करने वाले हैं उनका मान–सम्मान, सेवा सत्कार आदि करना तथा अग्नि, वायु, जल आदि प्राकृतिक तत्वों का यथायोग्य गुण संवर्धन करना।

संगतिकरण – अर्थात् विद्वानों, महात्मा पुरुषों का संग, परंब्रह्म के साथ आत्मा का संयोग वा प्राप्ति तथा अग्नि, वायु, जल आदि प्राकृतिक तत्त्वों के साथ यथायोग्य संगति – जिससे अनेकविध शिल्पकार्यों की सिद्धि होती है।

दान–संसार के प्राणियों के लाभ वा उत्कर्ष के लिए शुभ गुण, विद्या, सुख, सत्यधर्म और धन आदि का नित्य दान करना तथा जल, वायु आदि प्राकृतिक तत्त्वों की शुद्धि वा गुण संवर्धन के लिए अग्निहोत्र में घृतादि उत्तमोत्तम पदार्थों का प्रक्षेप किया जाना।

जिन कर्मों में विश्वकल्याणार्थ उक्त देव पूजा, संगतिकरण और दान किया जाता है वे सब यज्ञ शब्द से ग्रहण किये जाते हैं। ऋषिवर दयानन्द सरस्वती ने भी यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के द्वितीय मन्त्र के भाष्य में भी 'यज्ञ' शब्द का यही तात्पर्य लिखा है।

वैदिक संस्कृति में यज्ञों का संसार अत्यन्त विस्तृत है जिसे महर्षि प्रवर देव दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में सर्वत्र 'अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त' शब्दावली से सूचित किया है। इन अश्वमेधादि यज्ञों के इस विस्तृत वितान को यदि उप संहृत करना हो तो पंचमहायज्ञों के रूप में उपसंहृत कर सकते हैं। प्राचीन ऋषि महर्षियों ने इन पंचमहायज्ञों के महत्त्व को अश्वमेधादिक यज्ञों से भी बढ़कर बताया है और इन्हें 'महायज्ञ' के नाम से गौरवान्वित किया है समय और द्रव्य की दृष्टि से अश्वमेधादि यज्ञ चाहे कितने ही विशाल या बड़े क्यों न हों, लेकिन महत्त्व की दृष्टि से पंचमहायज्ञ इनसे बढ़कर ही है। गृहस्थ स्त्री–पुरुष अश्वमेधादि यज्ञों को रकें अथवा न करें किन्तु पंचमहायज्ञों का करना अत्न्त अनिवार्य कर्म है।

कुछ लोगों की मान्यता है कि हम तो अनेक प्रकार के दान–पुण्य परोपकार, दीन–दुखियों की सेवा, गौ–सेवा आदि कार्य करते रहते हैं, यही हमारेयज्ञ और महायज्ञ हैं। तो निवेदन है कि ये सभी परोपकार के कर्म यज्ञ तो हैं लेकिन ये पंचमहायज्ञों का स्थान कदापि नहीं ले सकते और न ही पंचमहायज्ञों के न करने से होने वाली हानि और पाप की पूर्ति कर सकते हैं। जैसे किसी को बुखार आया है, वह सोचे मेरे पास खांसी की दवा है उसे खने से बुखार उतर जायेगा। अथवा किसी को प्यास लगी है वह सोचे मेरे पास भोजन है उसे खाने से प्यास बुझ जायेगी, तो ये असम्भव है। जिस प्रकार बुखार के लिए बुखार की दवा, प्यास के लिए पानी की आवश्यकता है, उसी प्रकार सेवा के स्थान पर सेवा, दान के स्थान पर दान और पंचमहायज्ञों के स्थान पर पंचमहायज्ञ आवश्यक है। इसीलिए महर्षि मनु 'पंच्चैतांस्तु महायज्ञान् यथाशक्ति न हापयेत्' (4/16) का उद्घोष करते हुए किसी भी गृहस्थ को इन पंचमहायज्ञों के करने में प्रमाद न करने की आज्ञा प्रदान करते हैं।

ये पंचमहायज्ञ भौकि तथा पारमाथ्रिक दोनों मार्गों के सेतु और सुख के आधार हैं अतः प्रत्येक मानव इन पंचमहायज्ञों को करते हुए परमेश्वर की कृपा, आनन्द और समस्त ऐश्वर्यों को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। 'महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः' – (मनु. 2/28) इन पंचमहायज्ञों तथा सोमयागों का अनुष्ठान करने वाला मनुष्य ब्रह्म प्राप्ति के योग्य हो जाता है।

ये पंचमहायज्ञ हमारी समस्त उन्नतियों के प्रतीक हैं।

ब्रह्मयज्ञ – हमारी आत्मिक उन्नति, देवयज्ञ – पारिवारिक व सामुदायिक उन्नति, पितृयज्ञ – सामाजिक उन्नति, अतिथियज्ञ राष्ट्रीय उन्नति तथा बलिवैश्वदेव यज्ञ सम्पूर्ण विश्व की उन्नति का प्रतीक है। इस प्रकार ये पांचों महायज्ञ हमारी सभी प्रकार की उन्नतियों का प्रतीक और कल्याण के साधन हैं। यही कारण है कि वैदिक धर्मियों के यहाँ इन यज्ञों का प्रचलन चिरकाल से है और ये उनकी दिनचर्या के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग बने हुए हैं।

– आर्य समाज कमला नगर, आगरा (उ. प्र.),
मो.:–9719154615, 9690624239

"ऋषि का कर्ज चुकाने में"

आर्य समाज की रही भूमिका, आजादी को लाने में।
अच्छाई को पूर दिया है, अच्छा देश बनाने में।
(1) जिसने पढ़ा सत्यार्थप्रकाश, प्रगतिवान तो हुआ वही।
राष्ट्र-धर्म की खोली पर्तें, परिभाषा भी गुणा वही।
धर्म, कर्म की बातें सारी, उग्र क्रान्ति दर्शाने में।
(2) भगत सिंह, सुखदेव, आजाद, बिस्मिल गुरु दीवाने थे।
आजादी की बलिवेदी पर, चढ़ें वीर परवाने थे।
है अग्रणी सत्यार्थप्रकाश, क्रान्ति अनल धधकाने में।
(3) छुआछूत का दंभ मिटाया, महर्षि का अवदान अमर।
विधवाओं का पुनर्विवाह कर, तोड़ दिये सब आडम्बर।
पाखण्डों को मिटा दिया है, शुचिता को सरसाने में।
(4) मुल्ला और पादरी जी या, पंडे गपशप करते थे।
मठाधीश भोली जनता को, रोज-रोज ही ठगते थे।
ऋषि के तर्क अदम्य हुए हैं, हर गुत्थी सुलझाने में।
(5) दलितोद्धार हमारा नारा, गाँधी ने भी अपनाया।
राष्ट्र-प्रेरणा हमने दी है, मार्ग सरल ही करवाया।
स्वतंत्रता का भाष्य किया है, सबको प्रथम बताने में।
(6) राष्ट्र-धर्म का शुभ चिन्तक है, आर्य समाजी आन्दोलन।
वेद पढ़े, वैदिक धर्मी हों, ऐकेश्वर को करें मनन।
सभी बनें पुरुषार्थी हरदम, ऋषि का कर्ज चुकाने में।

- वरिष्ठ कवि- बाबूराम शर्मा विभाकर
52/2, लाल क्वाटर्स, गाजियाबाद (उ. प्र.)
मो.:-9350451497

वेद एवं ज्योतिष सम्मेलन (संगोष्ठी) का भव्य आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक 26–27 मार्च, 2016 को आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में वेद एवं वेदांग ज्योतिष विषय पर एक सम्मेलन संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। इनके अतिरिक्त, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, श्री मिठाई लाल सिंह जी, श्री अरुण अबरोल, कै. रुद्रसेन जी आर्य, श्री चन्द्रभानु जी आर्य, प्रधान आर्य समाज न्यूयार्क, अमेरिका, ठा. विक्रम सिंह जी सहित अनेकों विद्वान तथा आर्य नेता पधार रहे हैं। इस कार्यक्रम में विद्वानों द्वारा ग्रह–उपग्रह, नक्षत्र, लग्न, मुहुर्त, जन्म कुण्डली तथा फलित ज्योतिष आदि विषयों पर गहन चिन्तन किया जायेगा। सम्पूर्ण कार्यक्रम, आर्य समाज मुम्बई विट्ठलभाई पटेल रोड सान्ताक्रुज (पश्चिम) मुम्बई में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर 26 मार्च को विशेष यज्ञ सहित प्रातः 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। 27 मार्च को प्रातः 8 बजे से विशेष यज्ञ के उपरान्त 4.30 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों में आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

– सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सामाजिक उन्नति के लिए बनाया आर्य समाज

– स्वामी आर्यवेश

पलवल (हरियाणा) में 4 मार्च, 2016 को विशाल महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव समारोह सम्पन्न

हम समाज को किसी भी कीमत पर बंटने नहीं देंगे

– स्वामी श्रद्धानन्द

समाज में भाई चारा बनाये रखना समय की आवश्यकता

– दीपक मंगला

गत् 4 मार्च, 2016 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 192वें जन्मदिवस के अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर के राजनीतिक सलाहकार श्री दीपक मंगला के निवास के प्रांगण में विशाल समारोह आयोजित किया गया। यह समारोह वेद प्रचारिणी सभा पलवल के तत्वावधान में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर 21 कुण्डीय यज्ञ में सैकड़ों लोगों ने आहुति देकर सामाजिक सौहार्द एवं भाईचारे का संकल्प लिया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मुख्य उद्बोधन देते हुए महर्षि दयानन्द जी के तेजस्वी व्यक्तित्व एवं सिद्धान्तों पर विस्तार से प्रकाश डाला। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सभी प्रकार की संकीर्णताओं, असमानताओं तथा अन्धविश्वासों के विरुद्ध जीवन की आखिरी सांस तक संघर्ष किया। उन्होंने बड़े से बड़े प्रलोभन को ठुकराकर उच्चकोटि के त्याग का आदर्श स्थापित किया। वे एक निर्भीक संन्यासी थे, जिन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध लड़ने के लिए अनेक क्रांतिकारियों को प्रेरित किया। उनकी प्रेरणा से शहीदे आजम भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह ने यज्ञोपवीत धारण करके महर्षि के अनुयायी बनने का गौरव प्राप्त किया था। इसी प्रकार लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, भाई परमानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा, रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव तथा अन्य अनेक क्रांतिकारियों ने महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से अपने प्राणों को उत्सर्ग कर दिया। स्वामी दयानन्द जी ने स्त्री शिक्षा को अत्यावश्यक एवं वेद सम्मत बताया और वे इसके प्रबल प्रवक्ता रहे। उन्होंने स्त्री जाति के साथ हो रहे अत्याचारों यथा सती प्रथा, बाल विवाह एवं विधवाओं का अपमान आदि के विरुद्ध जबरदस्त आवाज़ उठाई। समाज में जाति के आधार पर ऊँच–नीच और छूआछूत की मानसिकता तथा कुव्यवस्था के विरुद्ध उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था की प्रबल पैरवी की। शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द जी ने क्रांतिकारी घोषणा करते हुए कहा था कि अनिवार्य समान एवं नैतिक शिक्षा लागू होनी चाहिए। शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं श्रम प्रधान प्रशिक्षण आवश्यक होना चाहिए। इसी प्रकार ईश्वर उपासना के नाम पर चल रहे वेद विरुद्ध मतों एवं परम्पराओं को चुनौती देते हुए एकेश्वर, निराकार एवं सर्वव्यापक आदि गुणों से सम्पन्न परमात्मा की उपासना को वेदानुकूल बताया। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने समाज का कोई भी क्षेत्र या पहलू नहीं छोड़ा जिस पर अपना दृष्टिकोण न दिया हो। स्वामी जी ने वर्तमान में हरियाणा में चल रहे जातीय विद्वेष एवं समाज को विघटित करने के कुप्रयास को अत्यन्त निन्दनीय बताया। उन्होंने कहा कि जाट आरक्षण आन्दोलन के दौरान जिन लोगों की जानें गई हैं तथा जिन लोगों की सम्पत्ति नष्ट हुई है उन सबके प्रति हम अपनी सांत्वना प्रकट करते हुए यह अनुभव करते

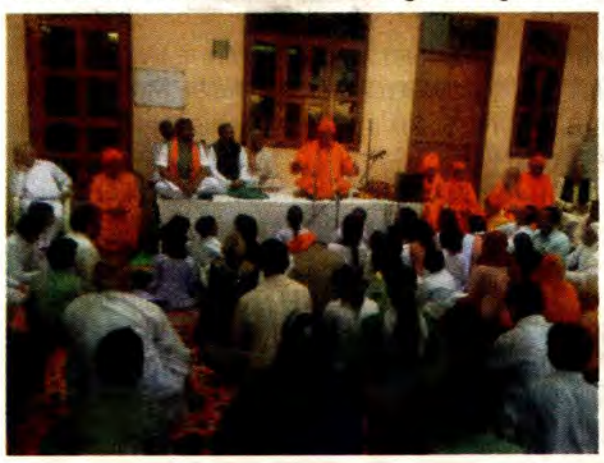

हैं कि इन परिस्थितियों में सिवाय सामाजिक सौहार्द एवं भाई–चारे की भावना को पुनर्स्थापित करने के और कोई उपाय दिखाई नहीं देता। उन्होंने कहा कि समाज को बाँटना तो आसान है किन्तु समाज को संगठित रखना और सबके साथ समरसता तथा सहयोग की भावना बनाना यह अत्यन्त आवश्यक है। स्वामी आर्यवेश जी ने हरियाणा की सभी बिरादरियों से अपील की कि उन्हें परस्पर प्यार, प्रेम एवं सौहार्द स्थापित करके जीवन की धारा को पुनः सामान्य स्थिति में लाना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज महर्षि दयानन्द जी के जन्मदिवस के अवसर पर यही मुख्य सन्देश है।

इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक तथा युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्यजनों का आह्वान किया कि वे वेद के संगठन सूक्त में आये मंत्रों की भावनाओं को आत्मसात करके पूरे समाज में सौहार्द का वातावरण बनायें। स्वामी जी ने महर्षि के सिद्धान्तों को आज भी उतना ही प्रासंगिक बताया जितना पहले था। उन्होंने कहा कि जब तक जन्मना जातिप्रथा समूल समाप्त नहीं हो जाती तब तक समाज में जातीय दंगों की सम्भावना बनी रहेगी। इसलिए यह आवश्यक है कि महर्षि के मन्तव्यों से आज प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम सब एक ईश्वर की सन्तान हैं और हम सबको मिलकर रहना है। उन्होंने घोषणा की कि हम किसी भी कीमत पर समाज को बंटने नहीं देंगे और जो बांटना चाहते हैं उनके मनसूबे हम कभी पूरे नहीं होने देंगे।

हरियाणा के मुख्यमंत्री जी के राजनीतिक सलाहकार श्री दीपक मंगला ने जहाँ समस्त आर्यजनों का आभार व्यक्त किया वहीं उन्होंने अपना संकल्प व्यक्त करते हुए कहा कि वे समाज में भाईचारे की भावना को बनाये रखने में अपना पूरा सकारात्मक सहयोग प्रदान करेंगे। श्री मंगला जी ने महर्षि दयानन्द जी द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलने की अपील करते हुए कहा कि वे एक महान समाज सुधारक थे जिन्होंने हिन्दू जाति को समस्त अन्धविश्वासों और पाखण्डों से निकलने की प्रेरणा दी थी। स्वामी दयानन्द जी ने स्वराज की बात सबसे पहले कही थी। आज उनके जन्मदिवस पर हम सभी लोग उन्हें नमन करते हैं और उनके द्वारा बताये गये रास्ते पर चलने का संकल्प लेते हैं।

इस अवसर पर 21 कुण्डीय यज्ञ के ब्रह्मा श्री देशराज शास्त्री एवं कन्या गुरुकुल हसनपुर की आचार्या निशा जी ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक यह विशेष यज्ञ सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर श्री अतर सिंह स्नेही का अभिनन्दन किया गया तथा श्री दीपक मंगला जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस समारोह में श्री सिमरन सिंह पटवारी, श्री वी. के. आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री चन्द्रपाल सिंह आर्य, श्री सुमेर सिंह शास्त्री, लाला मेघराज आर्य, श्री हेतराम गर्ग होडल, श्री सुरेन्द्र आर्य सहित अनेकों महानुभाव सक्रिय थे।

पृष्ठ–1 का शेष

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर स्पीकर हॉल रफी मार्ग, नई दिल्ली में भव्य समारोह का आयोजन

की जाने वाली उपेक्षा को अब सहन नहीं करेंगे। आज पाखण्ड, अन्धविश्वास, नारी उत्पीड़न, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी एवं आर्थिक–सामाजिक अन्याय चरम सीमा पर है। जिसके खिलाफ महर्षि दयानन्द जी ने 150 वर्ष पूर्व प्रचण्ड शंखनाद किया था। अतः आर्य समाज को संगठित होकर पूरे देश में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहिए और महर्षि द्वारा बताये गये रास्ते पर लोगों को लाने का प्रयास करना चाहिए।

समारोह के मुख्य अतिथि डा. विजय कुमार मल्होत्रा (अध्यक्ष, अखिल भारतीय खेल परिषद्) ने कहा कि महर्षि दयानन्द युग पुरुष थे, उन्होंने सबसे पहले कुरीतियों पर प्रहार किया । स्वामी दयानन्द महान क्रांतिकारी थे, उनके समाज उत्थान में योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता चाहे नारी शिक्षा, विधवा विवाह, बाल विवाह, पाखण्ड–अन्धविश्वास के विरूद्ध शंखनाद हो हर क्षेत्र में उनकी छाप दिखाई देती है। स्वामी दयानन्द ने जो ऊर्जा, चिंगारी, क्रांतिकारी विचार, आचरण, सिद्धान्त के विरूद्ध समझौता न करना गुण समाज को दिए उस चिंगारी को फिर से प्रज्ज्वलित करने की आवश्यकता है। समाज परिवर्तन का जो स्वप्न महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देखा था उसे आर्यजनों को आज पूरा करने का संकल्प लेना है।

ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा कि महर्षि दयानन्द का महान व्यक्तित्व युवा पीढ़ी के लिये प्रेरणा का पुन्ज है, उन्होने हिन्दू समाज को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द राष्ट्र नायक थे, जब सब ओर अन्धकार छाया था, उन्होंने कुरीतियों, अन्धविश्वासों, रूढ़ियों, मठाधीशों पर सीधा प्रहार किया जिसके लिए साहस की आवश्यकता होती है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने जिस तेजस्विता के साथ समाज की दिशा बदली वह समय के साथ आज मन्द हो गयी है उसे पुनः जागृत करने का आज हम संकल्प लें तभी दयानन्द जन्मोत्सव मनाना सार्थक होगा।

वैदिक विद्वान डा. जयेन्द्र आचार्य ने कहा कि सांस्कृतिक आक्रमण तोप व तलवार से अधिक खतरनाक होता है, आज युवा पीढ़ी को अपने सही गौरवशाली इतिहास, अपने महापुरुषों, शहीदों के बलिदान के बारे मे बताने की आवश्यकता है जिससे वह उन पर गर्व करना सीख सकें। समारोह का उद्घाटन आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह ने 'ओ३म् ध्वज'' फहरा कर किया।

राष्ट्रवादी शिवसेना के जयभगवान गोयल, हिन्दु महासभा के चन्द्र प्रकाश कौशिक, ओम सपरा (मैट्रो पोलटेन मैजिस्ट्रट), सुरेन्द्र कोहली, आचार्य महेन्द्र भाई ने भी अपने विचार रखे। स्वर्णा आर्या व नरेन्द्र सुमन के मधुर भजन हुए। आर्य नेता रविन्द्र मेहता, रवि चड्डा, जितेन्द्र डावर, रविदेव गुप्ता, राजेश मेहन्दीरत्ता, अमरनाथ गोगिया, सुरेश आर्य, रामकुमार सिंह, राकेश भटनागर, प्रवीन आर्य, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य आदि सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के तत्वावधान में आर्य कन्या सदन सैक्टर–15, फरीदाबाद में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी का 192वाँ जन्मदिवस एवं बोध दिवस संयुक्त रूप से समारोह पूर्वक मनाया गया

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के तत्वावधान में गत 6 मार्च, 2016 को आर्य कन्या सदन सैक्टर–15, फरीदाबाद में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव के अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता युवा आर्यनेता केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान डॉ. अनिल आर्य ने की। कार्यक्रम में मुख्यअतिथि के रूप में पधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा पूर्व विधायक श्री राजेन्द्र सिंह बीसला प्रधान जिला वेद प्रचार मण्डल, प्रो. श्योताज सिंह महामंत्री बंधुआ मुक्ति मोर्चा, श्री प्रेम कुमार मित्तल प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद, श्रीमती विमला ग्रोवर पूर्व प्रधाना आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद, श्री सत्यभूषण आर्य एडवोकेट पूर्व मंत्री एवं श्री महेश आर्य पूर्व मंत्री, श्रीमती बीना गोस्वामी, श्री नन्दलाल कालड़ा, श्री जीतेन्द्र सिंह आर्य, श्री सत्यदेव आर्य, श्री कुलभूषण आर्य, लाला मेघराज आर्य, श्री मुकेन्द्र कुमार आर्य आदि की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित उक्त कार्यक्रम में नगर के विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं आर्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का मंच संचालन आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री डॉ. गजराज सिंह आर्य एवं प्रधान श्री प्रेम कुमार मित्तल एडवोकेट ने कुशलता पूर्वक किया।

इस अवसर पर अपने सवा घण्टे के ओजस्वी उद्बोधन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं उनकी विचारधारा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जब भारत की शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति पर काले बादल मंडरा रहे थे तो भारतीय क्षितिज पर एक ऐसा देदीप्यमान सूर्य स्वामी दयानन्द जी के रूप में उदित हुआ जिसने शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में फैले प्रदूषण को धोकर अपने प्रकाश से निर्मल बना दिया। स्वामी दयानन्द जी ने राष्ट्र की आत्मा को पहचाना और आर्य संस्कृति की श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया। उन्होंने छद्मवेशी पाखण्डों को खण्ड–खण्ड कर इस देश के नागरिकों को नवचेतना से अनुप्राणित कर दिया। उन्होंने कहा कि जो सत्य है, जो तर्क पर खरा उतरता है वह सदैव स्वीकार्य होना चाहिए और जो इससे भिन्न है वह त्याज्य होना चाहिए। उन्होंने देश को विदेशियों के षड्यन्त्र से बचाकर शिक्षा और समाज का भारतीयकरण किया। उन्होंने ''मातृमान, पितृमान, आचार्यवान पुरुषों वेद'' की पुनीत भूमि पर रचे–बसे गुरुकुल पद्धति के शिक्षा आश्रमों को चिन्हित कर वेदों की ओर लौटो का नारा दिया। स्वामी जी ने कहा कि वे जानते थे कि वर्तमान युग विज्ञान का युग है। इस युग में संकुचित दृष्टिकोण रूढ़िवादिता और अन्धविश्वासों के मायाजालों में फंसा रहना अनर्थकारी होगा। इसीलिए उन्होंने लोगों को वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टि दी। भूत–प्रेत, गण्डे–ताबीज, ओझाओं के झाड़फूंक आदि के कुचक्रों में न जाने कितने स्त्री–पुरुष दिग्भ्रमित हो रहे थे।

कर्मकाण्डी और पाखण्डी पण्डे पुजारियों के चंगुल में लोग फंसे हुए थे, इन सामाजिक विसंगतियों और पाखण्डों को दूर कर महर्षि ने तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि देकर लोगों को ठग और स्वार्थी लोगों से बचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से जाति–सम्प्रदाय विहीन समाज की संरचना का, नारी के सम्मान का, निरक्षरता निवारण का और सुसंस्कारिता की शिक्षा का जो मार्ग हमें दिखाया उस मार्ग पर हम सबको चलना है। ऐसे देदीप्यमान सूर्य को मेरा शत–शत नमन।

इस अवसर पर श्री राजेन्द्र सिंह बीसला ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए जहाँ स्वामी आर्यवेश जी का विशेष आभार व्यक्त किया वहीं उन्होंने घोषित किया कि वे अपने साथियों के साथ जिले में आर्य समाज के प्रचार को तेज करेंगे और समाज में किसी भी प्रकार की कटुता, द्वेष एवं घृणा को नहीं पनपने देंगे। श्री बीसला जी ने कहा कि निःसंदेह देश यदि महर्षि दयानन्द के विचारों पर चलता तो आज हमारे देश की स्थिति कुछ और ही होती। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की भारत को विश्व गुरु बनाने की घोषणा पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यदि वे वास्तव में इस घोषणा को मूर्त रूप देना चाहते हैं तो महर्षि दयानन्द जी की धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक विचारधारा को प्राथमिकता के साथ लागू करें। क्योंकि महर्षि की विचारधारा मानवमात्र की विचारधारा है।

इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि आज हम जहाँ महर्षि दयानन्द जी का जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव मना रहे हैं वहीं आज अमर हुतात्मा पं. लेखराम जी का बलिदान दिवस भी है। पं. लेखराम महर्षि दयानन्द जी के सच्चे शिष्य थे और उन्होंने धर्म के लिए अपना बलिदान दे दिया। उन्होंने अपने जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण बात जो कही थी वह थी कि 'आर्य समाज में तहरीर और तकरीर जारी रहनी चाहिए'। इसका मतलब है कि आज हम लोगों को वेद प्रचार के लिए जहाँ व्याख्यान और कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए वहीं विधर्मियों की सिद्धान्त विरुद्ध बातों के लिए उनसे शास्त्रार्थ भी करते रहना चाहिए। डॉ. अनिल आर्य ने देश में पनप रही अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों पर रोष व्यक्त करते हुए कहा कि देश से बढ़कर कुछ नहीं होता। अतः हमें सबसे पहले अपने देश के बारे में सोचना चाहिए और जो लोग देश तोड़ने की बात करते हैं या राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त रहते हैं उनका विरोध होना चाहिए। उन्होंने हिन्दू समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों को मिटाकर संगठित होने की प्रेरणा दी।

श्री प्रेम कुमार मित्तल व डॉ. गजराज सिंह ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. अनिल आर्य, प्रो. श्योताज सिंह आदि को शॉल व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह अत्यन्त सफल रहा।

जुकाम : कुछ गलत धारणाएं

रोग वस्तुत: इलाज है और रोग के लक्षण वस्तुत: शरीर को निर्मल बनाने के साधन हैं। रोग शत्रु नहीं है, मित्र है। उससे भयभीत होने की किंचित आवश्यकता नहीं है। वह अवस्था इस बात का द्योतन करती है कि शरीर अपने कचड़े को साफ करके स्वत: निर्मल होने का प्रयास कर रहा है।

जहाँ नाक बहने लगी, गले में खराश हुई, हल्का ज्वर आया और साथ में थोड़ी खांसी शुरु हुई, हम कहने लगते हैं कि 'मुझे जुकाम ने पकड़ रखा है। जुकाम के ये विविध लक्षण वस्तुत: शरीर की उस अवस्थिति की सूचना देते हैं, जिनके फलस्वरूप ये लक्षण प्रकट होते हैं। वस्तुत: हमारी दृष्टि मूल कारण पर नहीं जाकर जिसके फलस्वरूप जुकाम होता है, कारण के प्रतिफल पर जाती है, जो प्रत्यक्ष दिखता है। जुकाम का असली रूप तो कारण है, प्रतिफल नहीं। जुकाम का इलाज लक्षण दूर करने से नहीं, बल्कि कारण को दूर करने से होगा।

इस बात को स्पष्ट समझ पाने के लिए आवश्यक है कि 'रोग की प्रकृति' जानी जाये। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा जा चुका है, पर सर्वसाधारण को चिकित्साशास्त्र का दर्शन पूरा-पूरा बुद्धिगम्य नहीं हो पाया है। रोग की प्रकृति समझने के लिए उक्त दर्शन को समझ अति आवश्यक है।

साधारणतया लोगों के मन में यह धारणा बैठी हुई है कि ठंडक के कारण जुकाम होता है। ठंडक किसी तरह शरीर में प्रवेश कर गई है, रक्त के प्रवाह में आ गई है और फेफड़े, जोड़ों आदि स्थानों पर उसने अपना घर बना लिया है।

जुकाम है क्या, होता क्यों है, उसका संकेत किस ओर है, आदि प्रश्नों की ओर वस्तुत: किसी व्यक्ति का ध्यान नहीं जाता। सर्दी के कारण जुकाम हुआ, इतनी बात को लोग समझ लेते हैं।

लेकिन लक्षण मात्र इस ओर संकेत करते हैं कि शरीर पर रोग का आक्रमण हो गया है। पर ऐसी कोई बात नहीं है। जुकाम या सर्दी कोई ऐसी चीज नहीं है, जो शरीर में प्रवेश कर जाये।

रोग में जो लक्षण प्रकट होते हैं, वे शरीर का कचड़ा साफ करने के लिए प्रकृति द्वारा अपनाये गये साधन हैं। कचड़ा साधारणत: शरीर से निकलते ही जाना चाहिए और ऐसी स्थिति नहीं आनी चाहिए कि शरीर में कचड़ा जमा हो जाये। पर अगर किसी प्रकार कचड़ा जमा हो जाता है, तो प्रकृति उसे निकाल फेंकने के लिए जिस साधन को अपनाती है, उसे हम मोटे तौर से रोग की संज्ञा दे देते हैं। इस संदर्भ में देखने पर आप इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि रोग वस्तुत: इलाज है और रोग के लक्षण वस्तुत: शरीर को निर्मल बनाने के साधन है। रोग शत्रु नहीं है, मित्र है। उससे भयभीत होने की किंचित आवश्यकता नहीं है। वह अवस्था इस बात का द्योतन करती है कि शरीर अपने कचड़े को साफ करके स्वत: निर्मल होने का प्रयास कर रहा है।

इसी सिद्धान्त को जुकाम पर भी लागू करें। लोगों की धारणा है कि जैसे घर में बिल्ली घुस जाती है, इसी प्रकार जुकाम शरीर में घुसता है, बिल्कुल भ्रामक है। जब हमें जुकाम होता है तो वस्तुत: हम स्वास्थ्य लाभ करते होते हैं, सच बात तो यह है कि जुकाम होने से पहले हम बीमार अथवा अस्वस्थ होते हैं। वह ऐसी स्थिति होती है, जिसमें शरीर में कचड़ा जमा होता है और उसे बाहर निकल जाने का कोई निकास प्राप्त नहीं हुआ करता। अगर जुकाम न हुआ होता और शरीर के इस कचड़े को बाहर निकालने का मार्ग न मिला होता, तो उस कचड़े के बढ़ने पर मृत्यु ही हो गयी होती। जुकाम वस्तुत: हमारे शरीर को निर्मल बनाता है।

हाइड्रोपैथिक एनसाइक्लोपीडिया (जल चिकित्सा विश्वकोष, भाग 2, पृष्ठ 64) में डॉ. आई. टी. ट्राल ने कहा है -

'बीमारी का हर दशा वस्तुत: शरीर से कचड़ा निकाल फेंकने का प्रकृति का प्रयास है। ऐसी स्थिति में कोई भी दर्शन सम्मत चिकित्सा पद्धति मात्र इतना ही कर सकती है कि वह शरीर को ऐसी सहायता दे कि वह कचड़ा निकालने का काम सफलतापूर्वक कर सके। इसके ठीक विपरीत एलोपैथिक चिकित्सा शरीर की इस स्वाभाविक क्रिया में व्यवधान उत्पन्न करती है और दबाती है, पर जल चिकित्सा की पद्धति यह है कि कचड़ा निकालने के शरीर के काम में सहायता देकर वह जल्दी से जल्दी सारा कचड़ा निकालकर शरीर को कचड़ाविहीन बनाता है। शरीर से कचड़ा बाहर निकालने के काम को जल चिकित्सा कभी नई दिशा देता है, कभी उसमें अभिवृद्धि करता है और कभी कुछ परिवर्तन करता है। सिद्धान्त रूप में हम यह मानते हैं कि रोग के लक्षण वस्तुत: शरीर को नीरोग बनाने की दशा में शरीर का प्रयास है। यह प्रयास लक्ष्य के अनुरूप नहीं हो सकता, अत: व्यवधान दूर करने के लिए प्रकृति सहायता अपेक्षित है।'

यह प्राकृतिक चिकित्सा का दर्शन है। इसके आधार पर यदि विचार किया जाये तो आप देखेंगे कि प्रकृति आपसे जिस प्रकार जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा करती है, उसके विरुद्ध कई सप्ताह, कई मास जीवन व्यतीत करने के फलस्वरूप आपका शरीर विजातीय द्रव्यों से भर गया था। उसके कारण आपका रक्त गाढ़ा हो गया था, जिससे अत्यावश्यक अंगों के क्रिया कलाप में व्यवधान उपस्थित हो गया था। वह कचड़ा गाँठों में जमा हो गया था और पूरे शरीर के कोष उस कचड़े से अभिभूत हो गये थे। इस प्रकार कचड़ा जमा होने का मुख्य कारण गलत खाना तथा अधिक मात्रा में भोजन करना है। इस प्रकार का अवस्थिति का मुख्य कारण भोजन ही है। व्यायाम न करने से, गंदी हवा में रहने से, कब्ज के कारण तथा त्वचा के पूर्ण सक्रिय न होने से यकृत और गुर्दे पर अधिक श्रम लादने के फलस्वरूप कचड़ा जमा होने के कार्य में सहायता मिलती है। क्योंकि, इनके फलस्वरूप विजातीय द्रव्य ठीक रूप में पूरा-पूरा शरीर से निकल नहीं पाता और यह स्थिति आ जाती है जो शरीर को असह्य होती है। यह खतरे की स्थिति है। ऐसी स्थिति में या तो शरीर विजातीय द्रव्य को निकाल फेंके या मृत्यु का वरण करे। आत्मरक्षा की अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप जितना सम्भव हो सकता है, उतनी तेजी से शरीर उस कचड़े को निकाल फेंकने का प्रयास करता है। ऐसी स्थिति आने पर हम उस लक्षण को रोग की संज्ञा देकर उसे दबाने का प्रयास करते हैं और अपने तरीके से कचड़ा साफ करने के प्रकृति के कार्य में सहायता न देकर उसे रोकने की कोशिश करते हैं।

जुकाम मात्र शरीर की एक प्रतिक्रिया है। जो दोष आ गया था, उससे मुक्ति पाने का एक प्रयास है। जब ऐसी स्थिति शरीर की हुई कि शरीर से कचड़ा निकालने के लिए जुकाम हो, तो जुकाम हुआ।

यह वस्तुत: इलाज था।

मान लीजिए कि कल आप पूर्णत: स्वस्थ थे और आज आपको बड़ा तगड़ा जुकाम हो गया। इसका सही अर्थ यह हुआ कि वस्तुत: कल वह दिन था, जब आप सचमुच बीमार थे और आज प्रकृति का कदम उस बीमारी से मुक्ति की ओर उठ गया है। कल शरीर की स्थिति सचमुच खतरनाक थी, क्योंकि शरीर विषमय विजातीय द्रव्य से लदा था। और आज वह दिन है, जब आप उससे मुक्त हो रहे हैं। अत: जुकाम से डरने के बजाए आपको उसका स्वागत करना चाहिए, क्योंकि आपके शरीर का यह सुधार की दिशा में उठा हुआ कदम है। यह एक लक्ष्य है और हम सबको यह कामना करनी चाहिए कि जुकाम हो।

जुकाम तभी होता है जबकि शरीर को विजातीय द्रव्य संभाले रहना असह्य हो जाता है और ऐसी स्थित आ जाती है कि विजातीय द्रव्य किंचित् और संभाले रहने से सारा संतुलन ही बिगड़ जाये।

अत: अब आप समझ गये होंगे कि जुकाम का कारण शरीर का विजातीय द्रव्य से भर जाना है।

गलत धारणाएँ

(1) नम हवा से जुकाम नहीं हो सकता जब हम सांस से हवा खींचते हैं, तो फेफड़ों तक पहुँचने से पूर्व वह सदा नम हो जाती है। इस दृष्टि से प्रकृति ने श्लेष्मा वाली झिल्लियों की व्यवस्था की है। अत: हवा चाहे वह मुँह के द्वारा या नाक के द्वारा फेफड़े तक पहुँचे, नम होती है। हवा पहले से कितनी भी नम क्यों न हो, फेफेड़े तक पहुँचने से पूर्व प्रकृति अपने ढंग पर नम बनाती ही है।

(2) पैर भींगे रहने से जुकाम नहीं होता प्राय: आदमियों और औरतों के पैर गीले होते रहते हैं। सबको जुकाम नहीं होता। यदि पैर भींगने से जुकाम होता तो सबको जुकाम होना चाहिए था। जो लोग ऐसा मानते हैं कि पैर गीला रहने से जुकाम होता है, वे भी इस तर्क पर कहते हैं कि जुकाम केवल उन्हीं को होता है, जिनके शरीर में कुछ खराबी होती है। अत: जुकाम का कारण शरीर की खराबी है, न कि पैर का गीलापन।

साधारणत: लोग समझते हैं कि भीगा कपड़ा पहनने से जुकाम होता है। पर, यह बात नितांत भ्रमात्मक है। गर्मियों में हमारी गंजी या नीचे पहने जाने वाले कपड़े पसीने से प्राय: गीले रहते हैं, पर जुकाम नहीं होता। पसीने से कपड़े गीले होने में और पानी से गीले होने में क्या अन्तर है?जब हम स्नान करते हैं, तो हमारी पूरी त्वचा गीली हो जाती है, पर नहाने से हमें जुकाम नहीं होता है।

(3) रात की हवा जुकाम का कारण नहीं है - भला कैसे माना जा सकता है?रात को जो भी हवा होगी, वह आखिर हवा ही तो होगी। क्या प्रकृति दिन में और रात में भिन्न-भिन्न हवाएं चलाती है?विश्लेषण से स्पष्ट है कि रात और दिन की हवा में कोई अंतर नहीं होता, बल्कि रात की हवा में गर्दगुबार कम होती है और वह दिन की हवा की अपेक्षा अधिक शुद्ध होती है।

(4) ठंडक जुकाम नहीं पैदा कर सकती - हमारी त्वचा की बनावट ऐसी है कि वह तापमान के अनुरूप शरीर को बनाये रखती है। हम प्राय: गरम स्थलों में खुले ठंडे में और ठंडे से गरम में आते-जाते रहते हैं और जितने लोग ऐसा करते हैं, उनमे अधिकांश जुकाम के शिकार नहीं होते। अत: ऐसी धारणा सर्वथा भ्रामक है।

(5) कपड़ा बदलने से जुकाम नहीं होता - कुछ लोग कहते हैं कि, हम अति गरम कपड़ा पहनते थे, जरा हल्का ठंडा कपड़ा पहना तो जुकाम हो गया। यदि किसी ने कपड़ा बदला और दूसरे दिन जुकाम हो गया, तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि कपड़ा बदलने मात्र से जुकाम हो गया। हजारों आदमी क्या इस प्रकार कपड़े बदलते हैं, पर उनमें सभी को जुकाम नहीं होता। यह स्पष्ट है कि जुकाम का कारण भिन्न है।

जुकाम से मुक्ति का उपाय

अत: यह स्पष्ट हो जाने पर कि जुकाम के लिए उत्तरदाई ये विशेष अवस्थाएं नहीं हैं, बल्कि शरीर की आंतरिक स्थिति है। हमें यह विचार करना चाहिए कि जुकाम से मुक्ति पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

भोजन

जुकाम से मुक्ति पाने के लिए सबसे सरल उपाय है कि 2-3 दिनों तक भोजन ही बंद करदिया जाये ताकि शरीर अपनी पूरी ताकत शरीर शोधन में लगा सके। जितने दिन उपवास किया जाये, उतने दिन हल्के गुनगुने पानी का एनिमा लेते रहना चाहिए।

यदि उपवास न कर सकें, तो 2-3 दिनों तक फल अथवा उबली सब्जी खाकर रह जायें। फल और सब्जी क्षारवर्धक भोजन है और अन्न, चीनी, मैदा आदि अम्लकारक। शरीर में अम्ल की वृद्धि ही वस्तुत: शरीर को रुग्ण बनाती है। अत: फल-सब्जी आदि के भोजन से आप शरीर में क्षारवर्धन करके संतुलन ठीक कर सकते हैं। फलों में अमरूद, सेब, नासपाती आदि सर्वोत्तम है। सब्जी में लौकी, नेनुआ, परवल, हरे शाक, शलजम, टमाटर, गाजर कुछ भी दिये जा सकते हैं।

विटामिन-सी शरीर के विष को बाहर निकालता है और जुकाम में शरीर विजातीय द्रव्यों से लदा होता है, अत: हल्के गुनगुने पानी में नींबू का रस अथवा मोसम्मी का रस लेना जुकाम से मुक्ति पाने में बड़ा सहायक होता है।

फलाहार-काल में भी एनिमा लेते रहना चाहिए।

जुकाम का उपचार बड़ा सीधा-सादा एवं सरल है। बारीक पिसी मिट्टी को आटे की तरह गूथ लें और उसकी एक इंच मोटी पट्टी पेड़ू पर आधा घंटा रखें और उसके बाद एनिमा ले लें। इससे विजातीय द्रव्य निकलने के लिए एक स्रोत मिलेगा और आप जल्द स्वस्थ हो जायेंगे। - ***आरोग्य से साभार***

आर्य समाज की गतिविधियाँ

स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली में मनाया गया महिला दिवस

भारतीय समाज में नारी की स्थिति समय, काल और परिस्थिति के अनुसार बदलती रही है– प्रवेश आर्या

भारतीय समाज एक पुरुष प्रधान समाज है, इसके बावजूद वर्तमान में भारतीय महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे आई हैं –पूनम आर्या

महिलाओं के सम्मान के लिये पुरुष वर्ग को सकारात्मक पहल करनी होगी – दीक्षेंद्र आर्य

टिटौली (रोहतक) : 8 मार्च 2016, स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली रोहतक में आज महिला दिवस बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या की अध्यक्षता में मनाया गया। कार्यक्रम का सञ्चालन राजकुमारी आर्या ने किया। उस अवसर पर बोलते हुवे बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति समय, काल और परिस्थिति के अनुसार बदलती रही है। समय के साथ उसकी स्थितियों में परिवर्तन आया है। वैदिक काल में नारी की स्थिति काफी मजबूत और प्रतिष्ठापूर्ण थी लेकिन धीरे–धीरे उसकी स्थितियों में बदलाव होने लगा। वक्त की आंधी ने महिला की स्थिति कमजोर व बेबसीपूर्ण स्थिति में पहुँचा दी। वैदिक काल में पुरुषों की सभा में शास्त्रार्थ करने वाली महिला बाद के कालखण्ड में घर की चारदीवारी के बीच कैद रहने वाली गुड़िया बना दी गई। वैदिक समाज में महिलाओं को पर्याप्त स्वतन्त्रता थी। माना जाता है कि वैदिक युग में महिलाओं का स्थान सम्मानीय था। मध्यकाल में उनकी स्थिति दयनीय हो गई, जबकि आधुनिक काल में महिलाएँ अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जूझ रही है। अपने हिस्से का आसमां लेने के लिए प्रयासरत है। अपने हाथों ही एक लम्बी लाइन खींचने की तैयारी में है।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि भारतीय महिला का सबसे प्रचलित रूप है, माँ–बहन, पत्नी, बहू–बेटी जिसके लिये परिवार की प्राथमिकता पहले है जो पारिवारिक जरूरतों के लिए घर से बाहर भी निकलती है लेकिन तब भी उसकी सोच स्वयं के लिए न होकर बल्कि सम्पूर्ण परिवार के लिए होती है सभारतीय समाज एक पुरुष प्रधान समाज है, इसके बावजूद वर्तमान में भारतीय महिलायें हर उस क्षेत्र में आगे आई हैं जिसमें कभी सिर्फ पुरुषों का वर्चस्व रहा है स एक तरह से देखा जाय तो शायद यही महिला सशक्तिकरण है।

आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेंद्र आर्य ने कहा कि महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं की प्रगति है परन्तु क्या वास्तव में यही महिला सशक्तिकरण है? सुबह स्कूल के लिए घर से निकलती छोटी बच्ची हो या कॉलेज जाती बालिग लड़की या फिर ऑफिस जाती कोई महिला हो या घरेलु कामवाली कोई भी आज सुरक्षित नहीं है – क्या यही महिला सशक्तिकरण है? महिलाओं ने हर क्षेत्र में पूरे आत्मविश्वास के साथ प्रगति की है किन्तु पुरुष वर्चस्व वाला हमारा समाज हर पल इस आत्मविश्वास को कुचलने को आतुर है, आये दिन महिलाओं के शोषण की खबरें मीडिया के माध्यम से सामने आती है स इसलिए आज आगे बढ़कर पुरुष समाज को महिलाओं के मान, सम्मान व स्वाभिमान को बरकरार रखने का संकल्प भी लेना होगा व जिम्मेदारी भी।

स्वामी महानन्द ने कहा कि नारी की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्धारित है।

स्वामी सोम्यानन्द (मथुरा) ने कहा कि किसी समाज की दशा–दिशा की स्पष्ट जानकारी इस सच्चाई को जानने से हो जाती है कि उस समाज में औरतों की क्या हालत हैं?

कार्यक्रम की सञ्चालन कर रही राजकुमारी आर्या ने अपनी सहयोगी एकता आर्या के साथ मिलकर गीत गात सुनाये जिसके बोल थे– बहनों बचो बुराई से अगर जीवन सफल बनाना है तथा पहले हम आप सुधरें फिर औरों का सुधार करें।

सोनू आर्य ने गीत सुनाया–

कितने दीवानों ने गर्दन कटवाई थी, सच कहता हूँ तब जा के आजादी आई थी।

रामेन्द्र आर्य ने गीत के माध्यम से बहनों से अंधविस्वास से दूर रहने का आग्रह किया।

सामाजिक सौहार्द चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के आज सातवें दिन के उपरान्त उपस्थित विशेष सहयोगी महिला कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। स्वामी चन्द्रवेश, स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी महानंद, खेम सिंह आर्य, सहसरपाल आर्य, रामेन्द्र आर्य दिक्षेंद्र आर्य, राजबीर वशिष्ठ, वीरेंद्र शास्त्री आदि आश्रम के विशेष अधिकारियों ने सम्मानित किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् मध्य प्रदेश के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द उत्सव सम्पन्न

इन्दौर : केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, मध्य प्रदेश के द्वारा 192वें, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर श्रीमती सुमित्रा महाजन (लोकसभा अध्यक्ष एवं सांसद इन्दौर) को महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित कालजयी अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। श्रीमती सुमित्रा महाजन ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का आज समस्त समाज ऋणी है, विशेष कर हमको शिक्षा, यज्ञ, वेद आदि का अधिकार दिलाकर, स्त्री जाति को "मातृ देवो भव" का सम्मान दिलाया। अतः इस ऋण से उऋण होने के लिए हम सभी को वैदिक सिद्धान्तों को मानना चाहिए। अभी–अभी इन्दौर में पहली बार "वेद सम्मेलन" भी करना यह सभी ऋषि की देन हैं

इस अवसर पर आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, मध्य प्रदेश एवं प्रधान, आर्य समाज मंदिर संचार नगर, इन्दौर, म. प्र.), श्रीमती स्नेहलता हांडा (प्रधाना आर्य समाज न्यू पलासिया, इन्दौर), श्री वेदरत्न आर्य (प्रधान आर्य समाज संयोगिता गंज, इन्दौर), श्री मनोज सोनी (मंत्री, आर्य समाज संयोगिता गंज, इंदौर), श्री विजय मालवीय (पूर्व प्रधान आर्य समाज दयानन्द गंज, इन्दौर), श्री संजय आर्य (प्रधान आर्य समाज सदर बाजार, इन्दौर), श्री ओम प्रकाश देवड़ा, श्री कुशल आर्य आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर आर्य समाज के कार्यकर्ताओं, अधिकारियों ने शुभकामनाएं दी। श्री गायत्री सोलंकी ने आभार व्यक्त किया।

– श्री ओम प्रकाश देवड़ा, मो.:–9977987777, 9977967777

अर्धकुम्भ मेला 2016 के अवसर पर

सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में

विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन एवं पाखण्ड–खण्डिनी पताका का आरोहण

20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक

पूर्व वर्षों की भांति अर्धकुम्भ मेला हरिद्वार में जनवरी, 2016 से प्रारम्भ होगा। इस अवसर पर विभिन्न मठ, मंदिर एवं धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पंडाल सजेंगे। अत: सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल की संयुक्त बैठक में यह निश्चय किया गया है कि 20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक इस अवसर पर हरिद्वार मे आने वाली धर्म पारायण जनता को धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत कराने के लिए एवं नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, मांसाहार एवं धार्मिक अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों से दूर रहने का संकल्प दिलाने के लिए तथा वेद प्रचार के माध्यम से ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप समझाने के लिए एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सम्मेलन योग साधना शिविर तथा नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन–चेतना रैली आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर जहाँ आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, भजनोपदेशक एवं कार्यकर्ता जनता का मार्ग दर्शन करेंगे वहीं देश के कोने–कोने से आर्यजन अपनी–अपनी समाजों के बैनर लेकर शिविर में भाग लेंगे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द की परम्परा को जीवित रखते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका का आरोहण भी किया जायेगा जो मेले में विशेष आकर्षण का कार्य करेगी। आप सभी से निवेदन है कि अभी से मेले में आने का मन बना लें तथा इस महत्त्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से तथा अपनी समाज की तरफ से अधिक से अधिक धनराशि तथा खाद्य सामग्री (दाल, चावल, आटा, घी, चीनी, सब्जी आदि) दान स्वरूप देकर पुण्य के भागी बनें तथा वेद प्रचार के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान प्रदान करें। वेद प्रचार शिविर का विस्तृत कार्यक्रम बहुत शीघ्र आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है। अपना सहयोग या दान राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से अथवा **"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के नाम भेजने की कृपा करें।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश	**स्वामी दिव्यानन्द**	**स्वामी प्रणवानन्द**	**प्रो. विट्ठलराव आर्य**	**पं. माया प्रकाश त्यागी**
प्रधान–सार्व.सभा	प्रधान वैदिक विरक्त मण्डल	कोषाध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल	मंत्री–सार्व.सभा	कोषाध्यक्ष–सार्व.सभा
गोविन्द सिंह भण्डारी	**सुखदेव वर्मा**	**दयाकृष्ण काण्डपाल**	**इं. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**डॉ. वीरेन्द्र पंवार**
प्रधान–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	कोषाध्यक्ष–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	मंत्री–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	प्रधान, आर्य समाज देहरादून	प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 11–12 मार्च, 2016
प्रकाशन की तिथि : 10 मार्च, 2016
वैदिक सार्वदेशिक
10 से 16 मार्च, 2016
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

शुभ संकल्प ही आएँ

**आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु वि वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सनद्मि वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।।**

—ऋ० १/८६/१ ; यजुः० २५/१४

ऋषिः—गोतमो राहूगणो पुत्रः।। देवता—वि वेदेवाः।। छन्दः—निच ज्जगती।।

"मनुष्य क्रतुमय (संकल्पमय) है, अतः मनुष्य को क्रतु अर्थात् संकल्प व अध्यवसाय करना चाहिए", परन्तु यह संकल्प हम किस प्रकार से करें?

पहले तो हमारे क्रतु (संकल्प) 'भद्राः' होने चाहिएँ। हम श्रेष्ठ संकल्प ही करें कल्याणकारी संकल्प ही करें। जो अभद्र संकल्प हैं उन्हें देवता स्वीकृत नहीं करते, अतएव उनसे कुछ बनता नहीं। इसलिए हमारा यह आग्रह है कि हमारे पास शुभ संकल्प ही आवें जिससे देवता अर्थात् संसार को चलाने वाली ई वरीय शक्तियाँ हमें उन्नत करती रहें, परन्तु संकल्पों के केवल शुभ होने से ही काम नहीं चलेगा, ये हमारे शुभ संकल्प बलवान् भी होने चाहिएँ। ये 'अदब्ध' हों, किसी विरोधी शक्ति से दबने वाले न हों और फिर ये संकल्प उद्भेदन करने वाले हों, अर्थात् मार्ग की सब विघ्न–बाधाओं का उद्भेदन करते हुए, सब गुत्थियों को सुलझाते हुए और सब बन्द किवाड़ों को खोलते हुए सफलता तक पहुँचाने वाले हों। हमारे शुभ संकल्पों में ऐसा बल भी चाहिए और ये संकल्प (परीत) पहले से घिरे हुए भी, अर्थात् किसी बड़ी अच्छाई के विरोधी भी नहीं होने चाहिएँ, हमारे संकल्प किसी भी महान् सिद्धान्त में हस्तक्षेप करने वाले भी नहीं होने चाहिएँ। यदि ऐसा होगा, तो भी हमारे संकल्प जगत् के देवों द्वारा प्रतिहत हो जाएँगे, मारे जाएँगे। इसलिए आज से हम में शुभ और ऐसे बलवान् संकल्प ही आवें जिससे कि (इन संकल्पों के ईश्वरीय नियमों के अनुकूल होने के कारण) देवता हमारी सदा उन्नति कराते जाएँ और दिन–रा अप्रमाद होकर हमारे रक्षक बने रहें। प्रभु के ये देव तो हमारी, उन्नति के लिए ही हैं और निरन्तर बिना भूल–चूक के हमारी रक्षा करने को तैयार हैं, पर हम भी बड़े–बड़े अभद्र संकल्प करके या यूँ ही निर्बल–से बहुत–से संकल्प करके ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देते हैं कि इन देवों की बड़ी भारी सहायता पाने से अपने–आपको वंचित कर लेते हैं। इसलिए आज से केवल भद्र नि चय ही हम में आवें तथा न दबने वाले, उद्भेदन करते हुए चले जाने वाले और अपरीत, महान् भद्र नि चय ही हम में आवें और चारों ओर से आवें, जिससे कि हम जगत् शासक के देवताओं की अनुकूलता में ही सदा बढ़ते हुए जीवन मार्ग पर चलते जाएँ।

शब्दार्थ—नः भद्राः क्रतवः वि वतः आयन्तु=हमारे पास श्रेष्ठ ही संकल्प सब ओर से आएँ। **अदब्धासः**=जो कभी न दबने वाले हों **अपरीतासः**=जो किसी से घिरे हुए न हों **उद्भिदः**=और जो उद्भेदन करने वाले हों **यथा देवाः न सदमिद् वृधे असन्**=जिससे कि देवता हमारे लिए सदा उन्नति के लिए होवें **दिवे दिवे अप्रायुवो रक्षितार च असन्**=और प्रतिदिन प्रमाद रहित होकर हमारे रक्षक होवें।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

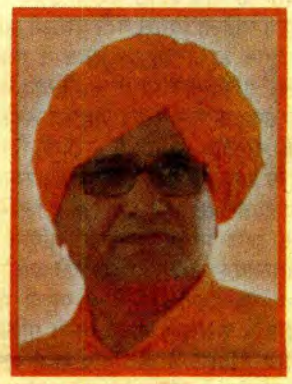

अवितरण की दशा में लौ... –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी–तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 79वें जन्मदिवस के अवसर पर

स्वामी इन्द्रवेश

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

समय : प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक, सायं 3 से 6 बजे तक

ब्रह्मा : स्वामी चन्द्रवेश जी आचार्य स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

हरियाणा में सामाजिक सौहार्द बनाने एवं शांति स्थापित करने के लिए यह चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सामाजिक सौहार्द यज्ञ के रूप में आयोजित किया जायेगा।

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

दिनांक : 2 मार्च, 2016 (बुधवार) से 13 मार्च, 2016 (रविवार) तक

संकल्प : इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद् जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेता एवं हजारों स्त्री–पुरुष, छात्र एवं छात्राएँ आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लेंगे।

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

मुख्य आकर्षण
चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
महिला दिवस पर विशेष कार्यक्रम
स्वामी इन्द्रवेश जयंती समारोह
कार्यकर्ता अभिनन्दन समारोह

विशेष : महायज्ञ में उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी सूचना देकर कृतार्थ करें। आप सभी महायज्ञ में आहुति डालकर राष्ट्र के नव–निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

आयोजक

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)
सम्पर्क : 9416630916, 9354840454, 9466430772, 01262–286900

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।